



वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ऑनलाइन शिक्षा की भूमिका

डॉ. पूनम सिंह

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग ग्लोकल यूनिवर्सिटी
मिर्जापुर पोल, सहारनपुर

डॉ. वी. के. शर्मा

डीन, शिक्षा विभाग ग्लोकल यूनिवर्सिटी
मिर्जापुर पोल, सहारनपुर

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस (कोविड-१९) को २२ मार्च २०२० में महामारी प्रख्यापित किया। जिसने ऑनलाइन आधारित प्रणाली नामक एक वैश्विक प्रतिमान को जन्म दिया। शिक्षा के क्षेत्र विस्थापन को ऑनलाइन शिक्षा के रूप में देखा जा सकता है। ऑनलाइन शिक्षा, जिसमें सभी भौगोलिक क्षेत्र के शिक्षार्थियों को शिक्षा तक आसान पहुँच प्राप्त हो सके, को सुनिश्चित करने की प्रवृत्ति होती है। जिससे शिक्षा में असमानताओं का समाधान हो सके। भारतीय सन्दर्भ में ऑनलाइन शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा अनेक पोर्टल, एवं वेबसाइट का संचालन एवं जागरूकता अभियानों को चलाया गया। जिससे एक प्रभावी ऑनलाइन शिक्षण वातावरण का निर्माण हो सके। विभिन्न विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालयों तक सभी के द्वारा अपने पाठ्यक्रमों को सरल एवं सहज रूप में ऑनलाइन भी प्रस्तुत किया गया। जिससे सीखने के स्वर्णिम अवसरों को भी निर्मित करने का प्रयास किया परन्तु भारत में डिजिटल डिवाइड की अवधारणा के साथ साथ औसत से अधिक संख्या में शिक्षार्थी एवं शिक्षकों का ग्रामीण क्षेत्रों से होना, मध्यम इंटरनेट कनेक्टिविटी गति, इंटरनेट डाटा के मूल्यों की अधिकता, शिक्षक शिक्षार्थी दोनों हेतु डिजिटल उपकरणों की कमी, ऑनलाइन के प्रति अप्रक्षिप्त शिक्षक एवं शिक्षार्थी आदि ऑनलाइन शिक्षा के प्रमुख अवरोधकों ने ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था को दूषित करने का कार्य किया है। इन सभी प्रयासों एवं अवरोधकों को केंद्र में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा ऑनलाइन शिक्षा के बदलते दृष्टिकोण का समीक्षात्मक वर्णन इस शोध लेख में प्रस्तुत किया गया है।

पारिभाषिक शब्दावली - डिजिटल एजुकेशन, ऑनलाइन शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षण।

प्रस्तावना

कोरोना वायरस नामक महामारी ने मानव अस्तित्व पर अनपेक्षित, अप्रत्याशित रूप से प्रतिघात किया है जहाँ विगत दो वर्षों में इस काल रूपी महामारी ने मनुष्य के अस्तित्व को ही संकट में नहीं डाला अपितु मानव की श्रेष्ठता पर भी प्रतिचिन्ह लगा दिया है। कोरोना वाइरस का संक्रमण स्थान चीन (वुहान सिटी) होने के बाद भी इसके विकसित होने के प्रमाण अभी भी अज्ञात

हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा इसके प्रभावी संक्रमण को रोकने एवं मानव प्रजाति को सुरक्षित रखने के लिए २१ मार्च २०२० को संपूर्ण विश्व में इसे महामारी घोषित करते हुए सभी देशों को लॉकडाउन लगाने का आदेश दिया गया जिसके फलस्वरूप मानव क्रियाविधियों को संचालित करने हेतु ऑनलाइन आधारित प्रणाली का सहारा लिया गया। इस प्रतिमान विस्थापन ने जहाँ बहुत सी असुविधाओं को जन्म दिया है तो वहीं हमें न्यू नार्मल में विकसित होने एवं भविष्य में सम्पूर्णता में वृद्धि का अवसर भी प्रदान किया है। शिक्षा के क्षेत्र में जहाँ लगभग २६४ मिलियन बच्चों एवं किशोरों का नामांकन अभी भी विद्यालय में नहीं हुआ है (यूनेस्को, २०२०) तदापि इस महामारी ने इस स्थिति को और भी खराब बना दिया है। आपातकाल के समय इसे क्रमबद्धता से संचालित करने के लिए संपूर्ण विश्व ने ऑनलाइन शिक्षण का सहारा लिया जो एक प्रकार की डिजिटल उपकरणों का शिक्षा के क्षेत्र में कॉपी पेस्ट प्रक्रिया है (मार्टिनेज, २०२०) शिक्षा में प्रभावी ऑनलाइन शिक्षण और अधिगम क्या है? यह प्रश्न एक दशक से शिक्षा के क्षेत्र में कई बार उद्धृत हुआ है। यदा-कदा प्रयासों के अतिरिक्त अधिकतर ऑनलाइन आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को आलोचना ही झेलनी पड़ी है। वर्ष २०२० के संवत् में यह भावी प्रश्न कोविड १९ महामारी के कारण दुनिया के लिए एक जनादेश साबित हुआ। उस समय, ऐसा आभास हो रहा था कि नई नार्मल एजुकेशन सिस्टम की होड़ में अनेक विश्वविद्यालय अपने पारम्परिक कक्षागत शिक्षण आधारित पाठ्यक्रमों को ऑनलाइन वातावरण में प्रतिस्थापित करने में जल्दबाजी कर रहे हैं क्योंकि उनके द्वारा किये जा रहे प्रयासों में तकनीकी अक्षमता, अनुभवहीनता एवं अल्प प्रशिक्षण आदि प्रदर्शित हो रहा था इसके अतिरिक्त वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ऑनलाइन शिक्षण ने अपनी उपयोगिता को सामान्य रूप से स्थापित करने का प्रयास किया है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान समय में बढ़ रही ऑनलाइन शिक्षा की मांग भविष्य में नवीन अवसरों का सृजन करने में सहायक होगी। जिसके लिए शिक्षकों, अभिभावकों, प्रबंधकों एवं सरकार सभी को विचार करने की आवश्यकता है।

शिक्षा की वितरण प्रक्रिया

अधिगम-शिक्षण की संपूर्ण प्रक्रिया को मूलतः तीन रूपों में देखा जा सकता है। प्रथम रूप, आमने सामने की शिक्षा, जिसका सृजन हजारों वर्ष पूर्व हुआ था। जिसमें एक ही समय, स्थान पर अधिक से अधिक शिक्षार्थियों को शिक्षित किया जाता है। शिक्षा के इस रूप को शिक्षण का स्वर्ण स्तर भी कहा जा सकता है। इसके पश्चात् संचार प्रौद्योगिकी के विस्तारित रूप के फलस्वरूप जन्मे स्क्रीन टू फेस शिक्षा व्यवस्था को शिक्षा का द्वितीय रूप कहा जा सकता है। जिसमें संचार प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर एवं नेटवर्क प्रौद्योगिकी की सहायता लेकर अधिगम-शिक्षण प्रक्रिया को रुचिकर एवं श्रेष्ठकर बनाने का प्रयास किया जाता है वहीं एकाएक परिवर्तित हुए ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था को शिक्षा के तृतीय रूप में देखा जा सकता है जिसमें डिजिटल आधारित उपकरण, मीटिंग, वेबसाइट, ऐप्स, शैक्षिक चैनल, ऑनलाइन क्लासरूम आधारित वातावरण आदि की सहायता से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को संचालित किया जाने का प्रयास किया जाता है। वर्तमान में ऑनलाइन शिक्षा न्यू नार्मल का प्रमुख भाग है।

वास्तव में शिक्षा के ये तीनों रूप यह प्रदर्शित करते हैं कि, शिक्षा की वितरण प्रक्रिया (असत्य) समसामयिक मान्यताओं पर आधारित होती है (उदाहरण के लिए सीखना केवल तभी होता है जब आप कुछ शर्तों को पूरा करते हैं) जो स्थानीय या वैश्विक वास्तविकताओं और समाज की जरूरतों से भिन्न होते हैं। अतः शिक्षित करना व होना प्रत्येक परिस्थिति में संभव है।

ऑनलाइन अधिगम में शिक्षार्थियों की भूमिका

ऑनलाइन अधिगम के स्वरूप में कई शब्दों की भूमिका रही है। ऑनलाइन अधिगम शब्द की उत्पत्ति दूरस्थ शिक्षा से हुई है। प्रायः दूरस्थ शिक्षा से तात्पर्य भौतिक दूरी को समाप्त करते हुए शिक्षार्थी एवं शिक्षक के मध्य पारस्परिक संचार अंतःक्रिया को बनाये रखने से है। ऑनलाइन अधिगम एवं ई-अधिगम दूरस्थ शिक्षा का विकसित रूप माना जाता है। दोनों शब्दों का प्रमुख लक्ष्य इंटरनेट के उपयोग के माध्यम से शिक्षक-शिक्षार्थियों के मध्य द्विगामी अंतःक्रिया सम्बन्ध का प्रतिनिधित्व करना है जिससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जा सके।

शिक्षण संस्थानों में ऑनलाइन शिक्षण को मुख्य धारा से जोड़ना शिक्षा प्राप्त करने का उदारतात्मक दृष्टिकोण माना जा सकता है क्योंकि यह विभिन्न प्रकार के प्रौद्योगिकी गतिविधियों का उपयोग करके शिक्षार्थियों के अधिगम वातावरण को समृद्ध बनाता है एवं शिक्षकों को शिक्षण में स्वायत्तता प्रदान करता है। सफल ऑनलाइन शिक्षण में पाठ्यवस्तु की गुणवत्ता एवं उसका अभिकल्पित रूप सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है। ऑनलाइन अधिगम में सुदृढ़ता प्रदान करने में संस्थान की भूमिका सर्वोपरि होती है। एवं उसके द्वारा शिक्षार्थियों को ऑनलाइन अभ्यास में प्रतिबद्धता तथा संस्तुति प्रदान करने में सहायता की जाती है जिससे शिक्षार्थियों में अधिगम वातावरण के प्रति सामुदायिक भावना का सृजन होता है। अत्याधुनिक विशेषता से ओतप्रोत होते हुए वर्तमान सन्दर्भ में प्राप्त शोध यह दृष्टिगोचर करते हैं कि ऑनलाइन शिक्षा प्रत्येक शिक्षार्थी को संतुष्ट करने में असमर्थ रही है जिसके लिए अधोलिखित कारण बताये गए हैं- ऑनलाइन शिक्षा के प्रति सामुदायिक असमझ, शिक्षार्थी की स्व भावना, संसाधनों की अनुपबलब्धता, अनभिज्ञता, निम्न स्तर का प्रशिक्षण, अरुचि एवं असंतोष की भावना (यूनेस्को २०२० एगुइलेरा २०२० वर्ल्ड बैंक २०२०) इन्हीं कारणों से ऑनलाइन कक्षा में शालात्याग की दर में वृद्धि हुई है।

ऑनलाइन अधिगम में सामुदायिक भावना, शिक्षार्थी प्रतिबद्धता एवं प्रोत्साहन को बनाये रखना प्रशिक्षकों के लिए कठिन कार्य है क्योंकि ऑनलाइन वातावरण की कक्षागत अंतःक्रिया सामान्य कक्षागत अंतःक्रिया से प्रायः भिन्न है (एगुइलेरा, २०२०) ऑनलाइन अधिगम में वृद्धि निरंतरता बनाये रखने, सामुदायिक भावना में वृद्धि करने एवं शिक्षार्थियों में सकारात्मक ऑनलाइन अधिगम अनुभव बनाये रखने हेतु प्रशिक्षकों को ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में ऑडियो-वीडियो व्याख्यान को शामिल करने के अतिरिक्त साधियों से संवाद हेतु समूह परिचर्चा, चैट सुविधा, प्रश्नोत्तरी सत्र एवं शैक्षिक गतिविधियों को भी अपनाने पर विचार करना होगा (मागाल्हेस, २०२०)

ऑनलाइन शिक्षा की आवश्यकता

उच्च शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षा का निरंतर बढ़ता निवेश प्रारम्भ में खर्चीला एवं अनावश्यक प्रतीत हो रहा है लेकिन अगर हम इसके दूरगामी परिणामों की ओर ध्यान दें तो हम पाएंगे कि ऑनलाइन अधिगम आगामी भविष्य में कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के लिए लागत प्रभावशीलता का प्रतिनिधित्व कर सकता है क्योंकि ऑनलाइन अधिगम एवं प्रशिक्षण के लिए वृहद भौतिक प्रांगण, अनावश्यक कार्मिकों एवं संसाधनों की आवश्यकता नहीं होती है (मागाल्हेस २०२०) केवल संभावित रूप से बढे हुए शिक्षार्थियों के नामांकन को समायोजित करने की आवश्यकता ही होगी। इन सभी शैक्षिक कक्षाओं को इंटरनेट कनेक्शन की सुविधा वाले किसी भी स्थान पर संचालित किया जा सकता है।

ऑनलाइन अधिगम के द्वारा शिक्षार्थियों तक विषय विशेषज्ञों की पहुँच आसानी से संभव हो सकेगी जिससे वे विषयवस्तु को प्रभावी ढंग से समझ सकते हैं एवं विषय से सम्बंधित सामग्री को प्रिंट मीडिया के अतिरिक्त ऑनलाइन ऑडियो-वीडियो एवं डेटाबेस के रूप में भी संगृहीत कर सकते हैं। इसकी उपलब्धता से शिक्षार्थियों को पुनः अभ्यास के अवसर प्राप्त होते हैं (एगुइलेरा, २०२०)

ऑनलाइन अधिगम में शिक्षक-शिक्षार्थी अंतःक्रिया का स्वरूप प्रायः सामान्य कक्षाओं से भिन्न होता है इसलिए इन कक्षाओं में शिक्षक की भूमिका एक मेंटर, फेसिलिटेटर के रूप में होती है। नियमित आईसीटी उपकरणों के उपयोग से शिक्षकों के साभिप्राय व्यवहार में भी परिवर्तन होता है जिससे शिक्षकों का प्रौद्योगिक कौशल एवं व्यावहारिक कौशल भी विकसित होता है जो शिक्षार्थियों की उपलब्धि में सकारात्मक परिवर्तन करने का प्रयास करता है (मार्टिनेज, २०२०)

ऑनलाइन अधिगम शिक्षार्थियों को स्व-अनुशासन विशिष्ट चयन की स्वतंत्रता एवं स्वयं अधिगम की ओर प्रेरित करता है तथा यह शिक्षार्थियों को अपने पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु शिक्षकों से अंतःक्रिया करने हेतु अधिक सहज महसूस करने का अवसर प्रदान करता है जो उनके अपने विचारों को अधिक सुद्रण बनाने में तथा सकारात्मक ढंग से अधिगम में संलग्न होने का समय देता है। इससे शिक्षार्थियों की अंतःक्रिया की गुणवत्ता में सुधार होता है। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन अधिगम सांस्कृतिक और विविधतापूर्ण आबादी के साथ जुड़ने के लिए निष्पक्ष स्तर प्रदान करता है क्योंकि उपस्थिति, लिंग, जातीयता, सामाजिक आर्थिक स्तर और अन्य बाहरी कारकों के कारण भौतिक एवं अभौतिक भेदभाव उत्पन्न हो सकता है। जो शिक्षार्थियों के उपलब्धि स्तर को प्रभावित करता है (लावी एवं अन्य, २०२०)

ऑनलाइन शिक्षा के प्रति भारत की पहल

वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने कुछ पुराने ऑनलाइन आधारित शिक्षण-अधिगम कार्यक्रमों को नवीन रूप प्रदान किया है तो कुछ नए कार्यक्रमों का सृजन भी किया है। स्वयं (स्टडी वेब ऑफ़ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग ऐस्पिरिंग माइंड्स) पोर्टल (जो कक्षा ९ से परास्नातक तक के विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करता है) एवं अन्य प्रभा के सभी ३२ डी.टी.एच. चैनलों (जो सामूहिक रूप में सप्ताह भर रिकार्डेड एवं लाइव माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण करेंगे) के विभिन्न पक्षों को ध्यान में रखते हुए ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने के लिए निर्देशित किया गया। इसी क्रम में वार्षिक रिफ्रेशर प्रोग्राम इन टीचिंग (अर्पित) नामक ऑनलाइन व्यावसायिक विकास कार्यक्रम एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा ई-पीजी पाठशाला (जो ७० विषयों में उच्च गुणवत्ता वाले पाठ्यक्रम आधारित इंटरैक्टिव ई-सामग्री प्रदान करता है) के लिए जागरूकता कार्यक्रम को भी एम.एच.आर.डी. द्वारा प्रभाव में लाया गया इसके अतिरिक्त नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी फ्री एन्ड ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर फॉर एजुकेशन, वर्चुअल लैब्स, ई-यंत्र, दीक्षा (नेशनल डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर टीचर्स), शिक्षा वाणी (रेडिओ चैनल) पी.एम. ई.विद्या आदि डिजिटल पहल के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा को प्रभावकारी बनाया जा रहा है (एम.एच.आर.डी.२०२०) इसलिए कहा जा सकता है कि हम ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियों और संभावनाओं में निरंतर सुधार करने का प्रयास कर रहे हैं। कोरोना महामारी के पश्चात् यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आने वाले समय में शिक्षार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, हस्त अनुभव, प्रयोगशाला कार्य, पुस्तकालय अनुभव, सहकर्मी ट्यूशन, उपचारात्मक शिक्षण, अनुसन्धान और नवाचार सहित शैक्षिक कठिनाईयों की नयी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। यहाँ यह प्रश्न भी सृजित होता है कि क्या कोविड १९ महामारी के पश्चात् ऑनलाइन शिक्षा को प्रभावकारी रूप प्रदान किया जायगा? यह विचारणीय है। हालाँकि हमारी नयी शिक्षा नीति २०२० के खंड २४ में इस बात की पुष्टि की गई है कि, भविष्य के लिए शिक्षा को डिजिटल रूप प्रदान किया जायगा। लेकिन यह तभी संभव हो सकता है जब हम ऑनलाइन शिक्षा को समालोचित रूप से देखने का प्रयास करें एवं अंतिम समाधान के रूप में ऑनलाइन और ऑफ़लाइन अधिगम कक्षाओं (हाइब्रिड मोड) का संतुलन बनाया जाय।

ऑनलाइन शिक्षा के लाभ

सामान्य रूप से ऑनलाइन शिक्षा ऑनलाइन साधनों के उपयोग पर बल देती है तथापि इन संसाधनों का उपयोग कर के एक गुणात्मक शिक्षा व्यवस्था का सृजन किया जा सकता है। ऑनलाइन शिक्षा शिक्षक-शिक्षार्थी दोनों को ऑनलाइन वेबसाइट, ई-बुक्स, ब्लॉग, पेपर आदि के माध्यम से विषयवस्तु को एकत्रित एवं निर्मित करने के लिए प्रेरित करने में, संलग्नता में वृद्धि करने में, विशेष शिक्षार्थियों की समस्या के समाधान में, ऑनलाइन कक्षाओं को रिकॉर्ड कर के पुनः उपयोग करने में, सीखने के विभिन्न विकल्पों का पता लगाने में, शिक्षकों के व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक विकास को नवीनता से विकसित करने में सहायक होती हैं। इस नवीन प्रतिमान के माध्यम से शिक्षक एक ही समय में अधिक से अधिक शिक्षार्थियों के साथ प्रभावी

अंतःक्रिया कर सकता है। विश्वविद्यालयों में नयी प्रौद्योगिकी का उन्नयन होने से विश्वविद्यालय स्तर की व्यवस्था प्रणाली एवं अधिगम-शिक्षण प्रणाली दोनों में सुधार करने, नवीन ऑनलाइन कोर्सेज संचालित करने में सक्षम हो सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा की प्रमुख चुनौतियाँ

ऑनलाइन शिक्षा प्रारम्भ से ही वैकल्पिक शिक्षा का एक प्रतिरूप रहा है। जिसके कारण इस पर ध्यान केंद्रण प्रारम्भ से ही कम रहा है। लेकिन कोविड-१९ महामारी ने इसे मुख्य शिक्षा की धारा में जोड़ते हुए सभी देशों की ऑनलाइन शिक्षा की स्थिति एवं संचालन क्षमता को सभी के समक्ष प्रस्तुत कर दिया है जिसमें विकसित देश से लेकर भारत जैसे विकासशील देश भी शामिल हैं। इसमें डिजिटल उपकरणों, संसाधनों, इंटरनेट कनेक्टिविटी तथा ऑनलाइन परिवेश की कमी जैसी सामान्य चुनौतियों के साथ साथ कुछ विशिष्ट चुनौतियाँ भी हैं। भारत में ग्रामीण बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण भी ऑनलाइन परिवेश की उपयुक्तता विचारणीय है। डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता वाले क्षेत्रों में भी ऑनलाइन शिक्षा के प्रति जागरूकता, तत्परता में कमी, संचालन कौशल एवं प्रशिक्षण में कमी पायी गई है (ए.एस.एस.ओ.सी.एच.ए.एम., २०२०) इसके अतिरिक्त शिक्षार्थी-शिक्षक संलग्नता, तनावपूर्ण वातावरण, बिजली आपूर्ति, शिक्षार्थी भूतपूर्व अनुभव, शिक्षार्थी के व्यावहारिक प्रशिक्षण में कमी, विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण की समस्या, शिक्षा के प्रायोगिक रूप की अनुपलब्धता, सांस्कृतिक वातावरण, अकुशल शैक्षिक ढांचा, डिजिटल थकान, डिजिटल दर एवं मूल्यांकन के सीमित अवसर आदि अनेक नकारात्मक कारन भी ऑनलाइन शिक्षा को दूषित करते हैं।

निष्कर्ष

तकनीकी विकास एवं बदलती शैक्षिक प्रवृत्तियों ने माध्यमिक शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। वर्तमान समय में ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने एवं विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान करने की मांग में वृद्धि हुई है। ऑनलाइन शिक्षा की इस मांग के कारण ऑनलाइन पाठ्यक्रमों का डिजिटल डिज़ाइन, उसे वितरित करने का तरीका समुदाय विशेष तक शिक्षा की पहुँच एवं शीघ्र प्रतिपुष्टि, ऑनलाइन शिक्षा की ओर अधिगमकर्ताओं को उन्मुख कर रही है। पाठ्यक्रम की सामग्री और प्रासंगिकता में छात्रों की रुचि पाठ्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए, उनके कार्य प्रदर्शन को प्रभावित करती है। शिक्षकों एवं संकाय सदस्यों को ऑनलाइन शिक्षण को स्वीकार करने के लिए अपनी शिक्षण सम्बन्धी भूमिकाओं को समझना होगा एवं अपने अनुभव का प्रयोग करते हुए तकनीकी जागरूकता को भी शिक्षण कार्य में प्रयोग करने की आवश्यकता होगी। ऑनलाइन शिक्षण में शिक्षक केवल शिक्षक न होकर एक विशिष्ट शोधार्थी (विषय सम्बन्धी जानकार), कंटेंट फेसिलिटेटर, टेक्नोलॉजिस्ट डिज़ाइनर, प्रबंधक एवं व्यवस्थापक, निर्देशक एवं परामर्शदाता तथा मूल्यांकनकर्ता की भूमिका को भी निभाता है। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन शिक्षण में शिक्षक सीखने की प्रक्रिया में छात्रों को सक्रिय रूप से संलग्न

करते हैं, जो ऑनलाइन प्रोग्राम को स्थापित करने एवं उसे प्रभावी रूप से संचालित करने में अहम् भूमिका निभाते हैं। ऑनलाइन शिक्षा एवं ऑनलाइन माध्यम से शिक्षण प्रदान करना दोनों एक योजनाबद्ध शैक्षिक प्रक्रिया हैं, जिसे बिना किसी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के नहीं किया जाना चाहिए अतः ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने से पूर्व यह सुनिश्चित कर लेना आवश्यक है की शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने में समर्थ हैं। अंततोगत्वा शिक्षा का यह नवीन रूप अभी भी पुलकित अवस्था में विराजमान है जिसे अत्यधिक शोध के माध्यम से परिष्कृत किया जाना शेष है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

एगुइलेरा-हेर्मिदा, पी.ए. (2020). कॉलेज स्टूडेंट्स यूज़ एन्ड एक्सेप्टेंशन ऑफ़ इमरजेंसी ऑनलाइन लर्निंग ड्यू टू कोविड-19. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च ओपन.

ए.एस.एस.ओ.सी.एच.ए.एम.(2020). डिजिटलाइजेशन ऑफ़ एजुकेशन: ए रेडिनेस सर्वे गुड स्टार्ट बट माइल्स टू गो, प्राइम्स पार्टनर्स, 1-14

एम.एच.आर.डी. नोटिस (20 मार्च 2020). कोविड-19 स्टे सेफ डिजिटल इनिशिएटिव।

मागाल्हेस, पी., फेर्रेइरा, डी., कन्हा, जे. एवं रोसारियो. पी. (2020)ऑनलाइन सर्वेज ट्रेडिशनल होमवर्क: अ सिस्टेमेटिक रिव्यू ऑन द बेनिफिट्स टू स्टूडेंट्स परफॉर्मेंस कंप्यूटर एन्ड एजुकेशन, 152 .

मार्टिनेज,जे. (2020). टेक दिस पेंडेमिक मोमेंट टू इम्प्रूव एजुकेशन एडसोर्स

यूनेस्को आईईएसएएलसी (2020) कोविड-19 एन्ड हायर एजुकेशन: टुडे एन्ड टुमारो इम्पेक्ट एनालिसिस पॉलिसी रेस्पॉन्सेस एन्ड रेकमेंडेशन.

लावी, एस. एवं नामा घनाविम, ई. (2020) वाय केयर अबाउट केरिंग ? लिकिंग टीचर्स केरिंग एन्ड सेंस ऑफ़ मीनिंग एट वर्क विद स्टूडेंट्स सेल्फएस्टीम, वेल बीइंग, एन्ड स्कूल एंगेजमेंट, टीचिंग एन्ड टीचर एजुकेशन,91.

वर्ल्ड बैंक (2020). रिमोट लर्निंग एन्ड कोविड-19 द यूज़ ऑफ़ एजुकेशनल टेक्नोलॉजीज़ एट स्केल एक्रॉस एन एजुकेशन सिस्टम एस ए रिजल्ट ऑफ़ मैस्सिव स्कूल क्लॉजिंग्स इन रेस्पॉस टू द कोविड-19 पेंडेमिक टू एनेबल डिस्टेंस एजुकेशन एन्ड ऑनलाइन लर्निंग।